अध्याय–8

हमारा राज्य बिहार

- बिहार के पश्चिम चम्पारण जिले के गौनाहा कन्या मध्य विद्यालय में कई छात्राएँ प्रतिदिन नेपाल से पढ़ने आती हैं।
- उत्तर–प्रदेश से आने वाली गाड़ियों की जाँच राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 2 पर कर्मनाशा के निकट की जाती है।
- बंगाल बंद के कारण पूरब से पटना आने वाली ट्रेनें लेट हो जाती हैं।
- झारखंड में राष्ट्रीय मार्ग सं. 33 में दरार पड़ने से राजू के दादाजी आज पटना नहीं पहुँच सके।

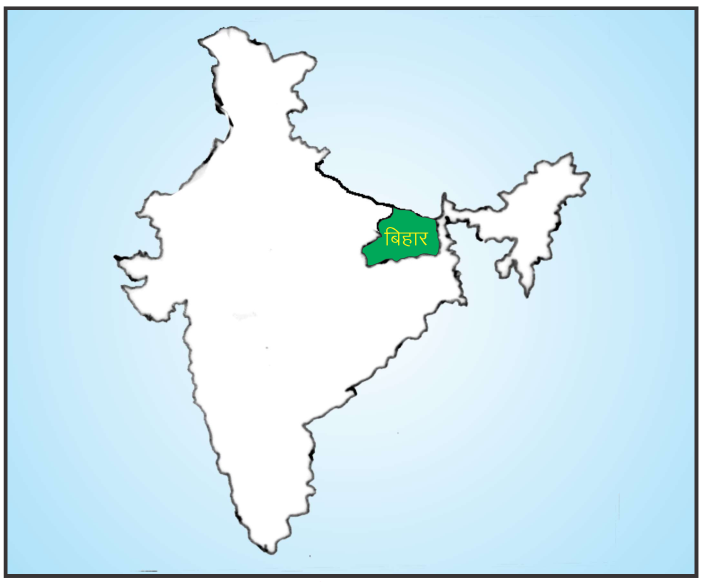

चित्र 8.1 भारत में बिहार की अवस्थिति

गुरुजी ने बच्चों के सामने कुछ सवाल रखे और कहा–सोचकर बताइये ऐसा क्यों होता है?

उन्होंने पुनः कहा – अब आइए, जरा भारत के इस नक्शे में अपने प्रदेश बिहार को ढूंढें। यह पूर्वी भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है जो पूरब से पश्चिम तक 483 किलोमीटर लम्बाई तथा उत्तर से दक्षिण तक 345 किलोमीटर चौड़ा है।

हम अक्सर अपने आस–पास के घरों में खेलने या किसी काम से आते–जाते हैं। ऐसे घर हमारे पड़ोसी कहलाते हैं। ठीक इसी तरह राज्यों से सटे दूसरे राज्य भी होते हैं जो पड़ोसी

राज्य कहलाते हैं। जैसे हमारे पड़ोसी एक–दूसरे के काम आते या एक–दूसरे से प्रभावित होते हैं ठीक वैसे ही हमारे पड़ोसी राज्य भी एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। बिहार के उत्तर दिशा में नेपाल देश, पूरब में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में झारखंड तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश राज्य है। सड़कें और रेल लाइनें अपने राज्य को पड़ोसी राज्यों से जोड़ती हैं।

क्रियाकलाप :

(क) अपने पड़ोसियों के नाम लिखिये। पड़ोसियों के यहाँ की कौन–कौन सी क्रियाएँ आपके जीवन पर प्रभाव डालती हैं, सोचकर लिखिये।

(ख) पड़ोसी राज्यों की घटनाओं से आपका राज्य कैसे प्रभावित होता है ? बताइये।

(ग) पड़ोसी राज्यों की घटनाओं की खबरों को अखबारों से काटकर एक स्क्रैप बुक तैयार कीजिये और उनका अपने राज्य पर पड़ने वाले प्रभाव लिखिए।

प्रशासनिक सीढ़ियाँ :

गुरुजी ने बताया – इतने बड़े राज्य को प्रशासनिक सुविधा के लिए 9 प्रमंडलों और 38 जिलों में बांटा गया है। एक प्रमंडल में कई जिले होते हैं और जिलों में अनुमंडल होते हैं। इन अनुमंडलों में कई प्रखंड होते हैं। ऐसे प्रखंडों की संख्या 534 है। ये प्रखंड कई पंचायतों से मिलकर बने होते हैं।

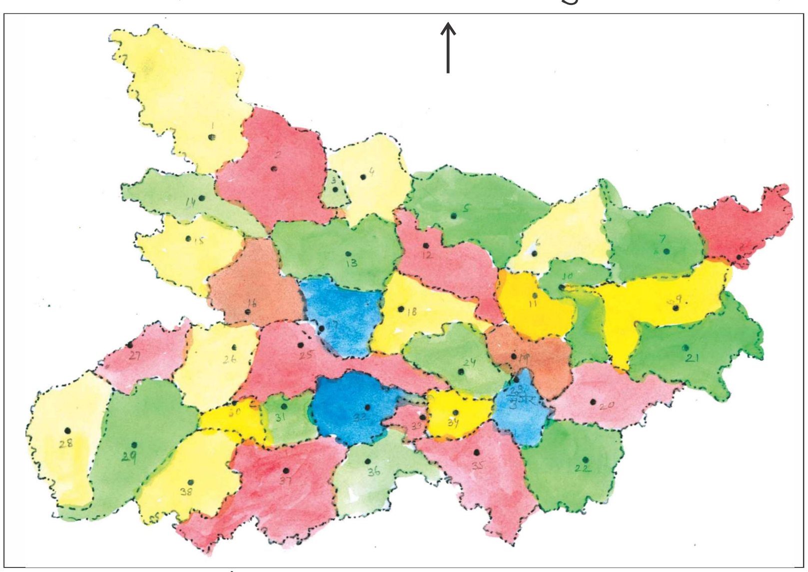

चित्र 8.2 बिहार के जिले

अपने प्रदेश का मानचित्र देखकर अपने जिले की चौहद्दी पता कीजिये।

क्रियाकलाप–

(क) चार्ट पेपर पर वृक्ष चित्र बनाकर अपने जिले का नाम लिखें उसके अंतर्गत आने वाले अनुमंडलों की सूची बनाइए। इस कार्य में शिक्षक से सहयोग लें।

(ख) आपके रिश्तेदार किन–किन जिलों में रहते हैं? पता कीजिये।

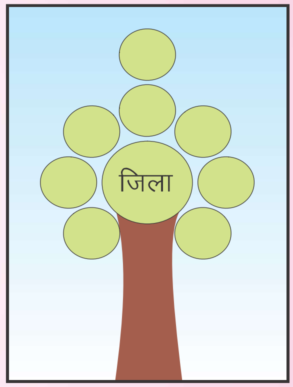

जलवायु :

बिहार के पूर्व में गर्म और आर्द्र जलवायु एवं पश्चिम में गर्म एवं शुष्क जलवायु मिलती है। यहाँ की जलवायु मॉनसूनी है। यहाँ मुख्यतः तीन ऋतुएँ होती हैं– ग्रीष्म, वर्षा, शीत।

गरमी का मौसम :

गुरुजी ने पूछा – कैसे पता चलता है कि गरमी आ गई है ?

रेशमा बोल उठी – जब हाट–बाजारों, घरों, यात्राओं में ककड़ी, खीरा, तरबूज, कुल्फी, लस्सी, शरबत, पंखा, कूलर, घड़े–सुराही की माँग बढ़ जाए तब समझिए कि गरमी का मौसम आ गया। होली के बाद से ही गरमी पड़नी शुरू हो जाती है जो जून तक पड़ती है। इस दौरान धूल भरी तेज हवाएँ एवं आँधियां चलती हैं जिसे 'लू' कहते हैं। कभी–कभी हल्की वर्षा भी हो जाती है। औसत तापमान 30^0 सेन्टीग्रेड रहता है। जबकि गरमी में तापमान 40^0 सेन्टीग्रेड से अधिक हो जाता है।

वर्षा का मौसम :

गुरुजी ने पुनः पूछा – वर्षा ऋतु कब आती है और इस समय हम क्या–क्या करते हैं ?

महेश बोला – यह मौसम जून के तीसरे सप्ताह से शुरू हो जाता है। जिससे अक्टूबर तक बारिश होती है। बरसात का पानी खेतों, नालों, गढ्ढों में भर जाता है। नदियों में उफान आता है। किसान खरीफ फसल बोने लगते हैं। दक्षिण बिहार में किसान धान के बिचड़े तैयार करके

रोपते हैं। इन दिनों कुदाल, खंती, ट्रैक्टर,, बैल, भैंस, प्लास्टिक के जूते, छाता इत्यादि का उपयोग बढ़ जाता है। इन दिनों ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भी खेती के कामों में पर्याप्त रोजगार मिल जाता है। नेपाल की तराई में पहाड़ी से तेजी से गिरने के बाद नदियाँ अपने साथ बड़ी मात्रा में मिट्टी एवं कंकड़ पत्थर लाती हैं जो नदियों के तल में जमा हो जाते हैं। इसके कारण नदियों के बाढ़ का पानी आस–पास के इलाकों में फैल जाता है।

रोहित बोल उठा – अपने राज्य में बाढ़ भी तो खूब आती है। गुरुजी ने बताया – बाढ़ का मूल स्रोत गंडक, बागमती, कमला, बकैया, करेह, महानंदा, कोसी इत्यादि नदियां हैं जिनका उद्गम नेपाल में है। सुपौल से दक्षिण सहरसा जिले तक लगभग 110 किलोमीटर तक का पूर्वी बांध और मधुबनी से दक्षिण खगड़िया तक 90 किलोमीटर तक के पश्चिमी बांध के बीच लगभग 10 किलोमीटर के चौड़ाई वाले क्षेत्रों के लोग वर्ष में लगभग 3–4 महीने दोहरी जिंदगी जीते हैं।

दोहरी जिंदगी के मायने

चित्र 8.3 बाढ़ राहत शिविर में सामग्री वितरण

गुरुजी बोले, पिछले दिनों मेरी भेंट सहरसा जिले के एक किसान से हुई थी। बातचीत के क्रम में उसने बताया कि पूर्वी बांध से पश्चिमी बांध के बीच लगभग 1100 वर्ग किलोमीटर में रहने वाले लोग लगभग चार महीने तक विस्थापित जिंदगी जीते हैं। ऐसा बरसात के दिनों में होता है। लोग बाढ़ की संभावना जान के तटबंधों और स्परों पर रहने चले आते हैं। वे फूस और प्लास्टिक के कामचलाऊ छत और दीवार बनाकर रहते हैं। सबसे पहले अपने मवेशियों को ऊँचे स्थानों पर पहुँचाकर इन्हें सुरक्षित करते हैं। ऐसा इसलिए कि बाढ़ का पानी इनके मवेशियों को बहा न ले जाए।

घरों को छोड़ कर तटबंध पर जाने से पहले खेतों में मनीजर के बीज छींट देते हैं। बाद में बाढ़ का पानी उतरने पर मनीजर के पौधे डंठल के रूप में तैयार हो जाते हैं। जो जलावन के काम आते हैं।

पता कीजिये–

- **बाढ़ वाले क्षेत्र में फसल के बजाय डंठल वाले मनीजर के बीज क्यों छींट देते हैं?दक्षिण बिहार में मनीजर के डंठल जैसे किसी पौधे की खोज कीजिये। मनीजर के बीज कैसे होते हैं?**
- **तटबंध और स्पर क्या है?**

तटबंधों पर रहते हुए ये मवेशियों की दूधों की बिक्री, बचा कर रखे गए अनाज, मछली पकड़ना और सरकारी सहायता पर निर्भर हो जाते हैं। ये अपने गांवों एवं खेतों को पानी में डूबे देखते रहते हैं। बाढ़ में घिरे गांव में अपने घरों को देखने के लिए इनके पास अपनी नाव होती है जिसकी मदद से वे घर की देखरेख करते हैं या काम की चीजें ले आते हैं। नावें सरकारी सहायता से भी मिली होती हैं। पानी उतरते ही वापस गांव में लौटते हैं और बाढ़ द्वारा लाई गई बलुआही मिट्टी में परवल, ककड़ी, मिसरीकंद (अरहुआ), तरबूज एवं दोमट मिट्टी में मक्का, दलहन, गेहूं आदि की फसलें उपजाते हैं। अगले आठ महीनों के लिए फिर से गृहस्थी जमाते हैं क्योंकि अगले साल पुनः चार महीने बाढ़ की विभीषिका झेलने को तैयार रहना होता है।

बताइये

1. **बाढ़ का पानी उतरते ही गाँवों एवं घरों की प्राथमिक जरूरतें क्या—क्या होती हैं?**
2. **बरसात में उत्तर बिहार के लोगों को किस प्रकार की कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं?**
3. **बाढ़ से बचाव के उपाय बताइये।**

लेकिन क्या यह बरसात पूरे राज्य में समान रूप से होती है? एक समय कहीं बाढ़ आ जाती है तो कहीं खेतों में भी पूरा पानी नहीं रुकता। कहीं कई किलोमीटर तक जल ही जल नजर आता है। यह जल लगभग 4 महीनों तक खेतों में जमा रहता है। अब सोचो कि बरसात के मौसम में प्रदेश के अलग—अलग हिस्सों में जनजीवन पर क्या असर पड़ता है?

कोसी प्रमंडल के जिलों में रहने वाले लोगों के बारे में बरसात के महीनों में अखबारों से जानकारी इकट्ठी करो और ऐसे खबरों की स्क्रैप बुक बनाओ।

टाल क्षेत्र का एक गाँव :

पटना से पूरब का एक बड़ा हिस्सा फतुहा से बड़हिया मोकामा तक टाल या ताल क्षेत्र कहलाता है। जरा वहाँ की कहानी भी उन्हीं लोगों से सुनें। बरसात में दक्षिण बिहार की नदियों के पानी का बड़ा हिस्सा गंगा में नहीं समा पाता है। यह पानी पूरे बड़े इलाके में दूर—दूर तक फैल जाता है और एक बड़ा ताल सा दृश्य उपस्थित करता है। रेलगाड़ी द्वारा पटना से लक्खीसराय जाते वक्त दोनों ओर समुद्र जैसा दृश्य दिखता है। बीच से रेलगाड़ी गुजरती है। एक छोटे स्टेशन पर उतरकर जब वहाँ के लोगों से पूछता हूँ कि चारों ओर पानी भरा है। धान की फसल रोपोगे नहीं तो फिर खाओगे कैसे?

रामधनी! यही नाम था उस आदमी का जिसने जवाब दिया— ''लगता है पहली बार इधर आए हैं। अरे यह ताल क्षेत्र है। इस ताल में किसी का घर नहीं होता। यहां हम खरीफ की फसल तो बोते ही नहीं। अक्टूबर में जब सारा पानी धरती सोख लेती है और जमीन दलदली होती है तब हम इनमें दलहन और रबी की फसलें बो देते हैं।

क्या तीन–चार महीने पानी भरे रहने पर खेतों में मेड़ बचे रहते हैं? यह सुनकर वह हँस पड़ा और बोला–मेड़! हमारे इन खेतों में मेड़ होते ही नहीं हैं।

फिर भला फसलों की रोपाई या कटाई कैसे करते होगे?

वह बताने लगा– पानी भरे रहने से मेड़ समाप्त हो जाते हैं। हम अपने–अपने खेतों की बुआई अंदाज से कर देते हैं। इनमें चना, मसूर, सरसों, तीसी, गेहूँ होता है। फसल तैयार होने पर अपने जमीन के कागजात में अंकित लंबाई–चौड़ाई को देखकर फसल काट लेते हैं। सभी ऐसा ही करते हैं। मिट्टी दलदली होने के कारण रबी की जबरदस्त फसल होती है। उसने यह भी बताया कि इधर दाल छाँटने वाली कई मिलें भी हैं। पशुओं के लिए पर्याप्त भूसा होता है। यह दुधारू पशुओं के लिए लाभदायक होता है क्या कोई इलाका सब्जियों के उत्पादन के अनुकूल है?हां पटना के निकट दियारा एवं जल्ला क्षेत्र। पता कीजिये कि ऐसा क्यों होता है?

क्रियाकलाप–

(क) कल्पना कीजिये कि प्रांत के अन्य हिस्सों में खेतों से मेड़ हटा दिए जाएं तो क्या हो ?

(ख) वैसे वस्तुओं की सूची बनाइये जो हमें ठंड से बचाती है।

(ग) दुर्गा पूजा से सरस्वती पूजा के बीच के महीनों को लिखो। इस बीच और कौन–कौन से त्योहार मनाए जाते हैं उनकी सूची बनाओ।

जाड़े का मौसम :

अब जाड़े की बात करें। गुरुजी बात शुरू करते इससे पहले ही संजय बोल पड़ा–"जाड़े में ठंडक पड़ती है। मेरी माँ रजाई और कम्बल ओढ़ने के लिए निकाल लेती है। लोग लकड़ी जलाकर अलाव तापते हैं। माँ कहती है कि इन दिनों खाने–पीने की चीजें जल्दी खराब नहीं होतीं। दादाजी तो गरम पानी पीते हैं। गरम–गरम चाय सबको भाती है। ऊन की बिक्री बढ़ जाती है। ठंड से बचने के लिए लोग मफलर बांधते हैं। राजू ने टोका–हां सर, अपने प्रधान सर भी इन दिनों टोपी पहनकर आते हैं और सबको कान ढँकने के लिए कहते हैं।

वो सब तो ठीक है लेकिन ये सब कितने दिनों तक चलता है? गुरुजी पूछ बैठे। अब सब चुप। मुस्कुराते हुए गुरुजी बोले "दुर्गा पूजा से सरस्वती पूजा तक।" इन दिनों तापमान कम हो जाता है। दिसम्बर–जनवरी महीने में शीतलहर चलती है। शीतलहरी में तापमान 5^{0}–10^{0} सेन्टीग्रेड तक चला आता है। प्रायः दोपहर तक कोहरा छाया रहता है।

कृषि व्यवसाय :

गुरूजी ने कहा –

बच्चों, तुम अगर गाँव में रहते हो, तो हर सुबह देखते होगे कि परिवार के लोग खेत और खलिहान में काम करने जाते हैं। वे कई प्रकार की फसलों का उत्पादन करते हैं। गाँवों में यही प्रमुख व्यवसाय है। अपने राज्य बिहार में धान की खेती प्रमुख है। धान से ही चावल प्राप्त होता है। यही हमारा प्रमुख खाद्यान्न है। फिर गेहूँ, मक्का, दलहन और तेलहन की भी खेती होती है। ये सभी फसल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसान उपयोग में लाते हैं। लेकिन वैशाली, समस्तीपुर और मुजफ्फरपुर जिलों में तम्बाकू, छपरा, सिवान, गोपालगंज एवं चम्पारण क्षेत्र में गन्ना तथा पूर्णिया, कटिहार, अररिया और किशनगंज जिलों में जूट की खेती होती है। इन फसलों को कारखाने में ले जाया जाता है। तम्बाकू से सिगरेट और बीड़ी, गन्ना से चीनी, गुड़ एवं जूट से पाट के सामान बनाये जाते हैं।

वन :

बिहार में मात्र 6.4 प्रतिशत भू–भाग पर वन हैं। उत्तर–पश्चिम में हिमालय की तराई में सोमेश्वर की पहाड़ियों में जंगल मिलते हैं। अररिया एवं पूर्णिया जिलों के कुछ हिस्सों में विरल वन पाए जाते हैं। जमुई एवं बांका जिलों के भी कुछ हिस्सों में जंगल हैं। गया तथा नवादा जिलों में भी झारखण्ड की सीमा से सटे कुछ हिस्से वन से आच्छादित हैं। राजगीर की पहाड़ियों तथा कैमूर पहाड़ियों पर भी वन मिलते हैं। लेकिन अधिकतर क्षेत्रों में विरल वन हैं।

तम्बाकू :

हमने अक्सर कई लोगों को तम्बाकू खाते देखा है। क्या तुमने किसी तम्बाकू की दुकान पर ''सरैसा तम्बाकू'' का बोर्ड देखा है?इसका मतलब क्या है?कभी सोचा है? गुरुजी की यह

बातें चौकाने वाली थीं। सचमुच ऐसा बोर्ड तो तम्बाकू की दुकानों में दिखता है। गुरुजी ने कहा–मैं तम्बाकू बेचने वाले नारायण लाल को बुलाता हूँ। दूसरे दिन गुरुजी के साथ नारायण लाल आए और सरैसा तम्बाकू की जानकारी दी ।

नारायणलाल ने बताया कि उत्तर बिहार में समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर और वैशाली जिलों के कुछ प्रखंडों में तम्बाकू उपजाया जाता है। इन इलाकों को संयुक्त रूप से सरैसा क्षेत्र बोला जाता है।

यह किसी खास गाँव का नाम न होकर तम्बाकू उत्पादन करने वाले पूरे इलाके का ही नाम है। इस इलाके का तम्बाकू देश के अन्य राज्यों में भी भेजा जाता है। वहाँ के किसानों की खेती बाड़ी का अर्थ खेतों को खूब साफ रखकर तम्बाकू के पौधों को लगाना, उसके पत्तों को सुखाना और उन्हें व्यापारियों के हाथों बेच देना होता है। हमारे जैसे कई छोटे दुकानदार की अर्थोपार्जन का साधन यही तम्बाकू की बिक्री है। इस इलाके के किसान बड़ी मेहनत से तम्बाकू के पौधे उगाते हैं। यहां की मिट्टी भी चूनायुक्त होती है। एक सीध में एक–एक हाथ की दूरी पर चारों तरफ छोड़ते हुए तंबाकू के पौधे रोपे जाते हैं। शुरूआत के एक सप्ताह तक धूप से बचाने के लिए दिन में पौधों को केले के पत्तों या टोकरी से ढँक देते हैं। क्यारियों में खरपतवार एवं ढेले बिल्कुल नहीं रहते। तंबाकू के पौधे धीरे–धीरे बड़े होकर फैलते हैं। बाद में इन्हीं पत्तों को तोड़कर उन्हें भिंगा–भिंगा कर धीरे–धीरे सुखाते हैं और पत्तों को लपेट कर रखते जाते हैं। चूँकि सरैसा इलाके के तम्बाकू काफी कड़कदार होते हैं इसलिए तम्बाकू बेचने वाले सरैसा के नाम का इस्तेमाल तम्बाकू को प्रभावशाली बनाने के लिए करते हैं।

मीठी चीनी कहां से आती?

''गुरु गुड़ और चेला चीनी''– यह मुहावरा हम रोजाना सामान्य बातचीत में कहते सुनते हैं। मगर क्या कभी सोचा है गुड़– चीनी कहां से आती है? गुड़–चीनी की कहानी जानने के लिए बिहार के उत्तर–पश्चिम में स्थित गोपालगंज या पश्चिमी चम्पारण पहुंचना होता है। गुरुजी ने कहा तो सभी बच्चे सतर्क होकर बैठ गए। और एकदम से सन्नाटा छा गया।

गुरुजी कहने लगे– ''मैं वहाँ एक काम के सिलसिले में गया था। वहाँ नेपाल की पहाड़ियों

चित्र 8.4 चीनी मिल का दृश्य

का पानी बहकर आता है और मिट्टी में चूने का अंश चला आता है। यह मिट्टी ईख की खेती के लिए उपयुक्त है। मैंने देखा कि सैकड़ों ट्रैक्टर पर गन्ने लदे हुए हैं और वे चीनी मिलों की ओर जा रही हैं। चीनी मिलों में किसान गन्नों को बेच देते हैं। तभी मनोज बोला– मेरे नानाजी बड़े किसान हैं । वे अकेले सौ–सवा सौ ट्रैक्टर गन्ने बेचते हैं– फिर इन्हीं गन्नों के रस से गुड़ और चीनी बनाई जाती है।'' यही सच है न गुरूजी ।

बिल्कुल ठीक! चूंकि किसानों के गन्ने खरीदने के लिए मिलें तैयार रहती हैं और उन्हें नकद पैसा भी दे देती हैं इसलिए यहां के किसान गन्ना उपजाना पसंद करते हैं। किसान भी गन्ने की फसल एक ही खेत में दो–तीन बार लगातार उपजाकर नकदी प्राप्त कर लेते हैं। चीनी मिलें उन गन्नों से रस निकालकर चीनी बनाती हैं और फिर यही चीनी बोरों में भरकर बाजार पहुंचती है। छोटे किसान गन्नों की पेराई खलिहानों में ही करके तैयार रस से गुड़ बना लेते हैं। इन गुड़ों की भी बिक्री सहज ढंग से हो जाती है।

गुरुजी आगे बोले– वहाँ बहुत सारे लोगों को इन चीनी मिलों में रोजगार मिला हुआ है। स्थानीय लोग गन्ने को ढोने के लिए ट्रैक्टर खरीदकर किराये पर देते हैं। गन्ना के उत्पादन से किसानों के अलावा कई लोगों को रोजगार उपलब्ध होता है। तभी मंजू बोल उठी– हां सर, मेरी मौसी का घर सारण जिले में है। वहां चीनी मिलें भी हैं और चॉकलेट भी बनती है।

वह जब भी आती है हम लोगों के लिए गुड़ की ढेलियाँ और ढेर सारी चॉकलेट लाती है। गुरुजी बोले, वैसे आपकी बोली भी गुड़ जैसी ही मीठी है। चलिये, अब टिफिन का समय हो गया। हाँ हाँ, चलो चलो सब चलते हैं।

(क) पता कीजिये गन्नों को किसान मिलों में ले जाकर कैसे तौलते होंगे और तैयार चीनी को बाजार में भेजने के लिए किन–किन चीजों की आवश्यकता होती होगी?

(ख) छोटे किसान गन्नों के छिलकों का क्या उपयोग करते हैं?सोचकर बताइये।

(ग) बेतिया के ईख उत्पादक कागज मिलों और डिस्टिलिरियों को कच्चे माल भी उपलब्ध कराते हैं– बताइये ऐसा कैसे संभव है?

वन्य प्राणी :

बच्चों, क्या आप जानते हैं कि बिहार के जंगल में अनेक जानवर रहते हैं। बाघ, भालू, हिरण, बारहसिंगा, नीलगाय और हाथी जैसे अनेक जानवर, जंगल में मंगल मनाते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है। कभी बिहार के घने जंगलों में बाघ और हाथियों की भरमार थी। लेकिन जनसंख्या के बढ़ने से जंगल कटते गये और जंगली जानवर घटते गये। आज भी पश्चिमी चम्पारण जिला के बाल्मीकिनगर अभ्यारण्य में रात्रि के समय बाघों की दहाड़ सुनाई देती है। यहाँ पर बाघ के अतिरिक्त जंगली सूअर, भालू और हिरण भी बहुलता से मिलते हैं। बाल्मीकिनगर अभ्यारण्य के अतिरिक्त रोहतास जिले का कैमूर अभ्यारण्य, नालन्दा जिले का राजगीर अभ्यारण्य, गया में गौतम बुद्ध अभ्यारण्य और खड़गपुर की पहाड़ियों के बीच अवस्थित भीम बाँध अभ्यारण्य और इसके गर्भ जल के सोते किसी का भी मन मोह सकते हैं। गंगा और सोन नदी के दियारे में उगी लम्बी घासों के बीच नीलगायों को दौड़ते हुए देखा जा सकता है। यहाँ साँप की विभिन्न प्रजातियाँ मिलती हैं। इनमें गेहूंअन (कोबरा), करैत, धामिन इत्यादि मुख्य रूप से मिलते हैं। इसी प्रकार बेगूसराय जिले के काबर झील क्षेत्र में जाड़े के मौसम में देशी और विदेशी पक्षियों का झुंड देखा जा सकता है। पटना नगर में स्थित संजय गाँधी जैविक उद्यान भी जंगली जानवरों को नजदीक से देखने का एक आकर्षक जगह है। जाड़े के दिनों में पटना के दानापुर सैनिक छावनी के निकट गंगा तट पर साईबेरियन क्रेन

(प्रवासी पक्षी) भारी संख्या में प्रतिवर्ष आते हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए सरकार ने यहाँ वाच टावर बनाने का निर्णय किया है ताकि लोग इन पक्षियों को सुविधाजनक ढंग से देख सकें।

जनसंख्या :

बच्चों, क्या आप जानते हैं कि हमारे देश में प्रत्येक 10 वें वर्ष जनगणना होती है। 2011 ई0 की जनगणना के अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या 10,38,04,637 है। बिहार से अधिक लोग सिर्फ उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में रहते हैं। यहाँ अधिकतर लोग गाँवों में रहते हैं। यहाँ कई बड़े नगर भी हैं। बिहार की राजधानी पटना सबसे बड़ा नगर है। इस नगर में करीब 20 लाख लोग रहते हैं। बिहार की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इसी का प्रभाव है कि वनों को काटकर लगातार खेत बनाया जा रहा है। गहन खेती करने से भी मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम होती जाती है। ऐसा इसलिए होता है कि एक ही खेत से लगातार कई प्रकार की फसलें उपजाई जाती हैं। दूसरा अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए रासायनिक खादों का भारी मात्रा में उपयोग किया जा रहा है। यह भी भूमि की उर्वरा शक्ति के नष्ट होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। शहरों की वृद्धि से परिवहन साधनों में भी वृद्धि होती है। इन कारणों से प्रदूषण भी फैल रहा है। बिहार की जनसंख्या वृद्धि को रोकना आवश्यक है। फिर सभी पढ़े–लिखे और स्वस्थ रहें, यही सबका सपना होना चाहिए।

क्रिया–कलाप

(क) बिहार के नक्शे पर उन जिलों को दर्शाइये जहां वन पाए जाते हैं।

(ख) वन न हो तो क्या होगा? सोचिये और कक्षा में चर्चा कीजिये।

(ग) बिहार में पाये जाने वाले जंगली जानवरों की सूची बनाइये ।

(घ) बिहार के मानचित्र में सभी जिलों को दिखा कर उसे अपनी कक्षा में प्रदर्शित करें।

अभ्यास

1. सही विकल्प को चुनें।

i. रबी फसलों के लिए मशहूर ताल क्षेत्र अवस्थित है–

(क) तराई क्षेत्र में (ख) पटना से पूरब

(ग) पटना से पश्चिम (घ) शाहाबाद में

ii. सोमेश्वर पहाड़ियाँ हैं–

(क) तराई क्षेत्र में (ख) राजगीर में

(ग) कैमूर में (घ) मंदार हिल में

iii. सरैसा क्षेत्र में शामिल जिले हैं–

(क) सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल (ख) सुपौल, सहरसा, अररिया

(ग) वैशाली, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर (घ) जहानाबाद, पटना, गया

iv. गन्ना उत्पादक जिले हैं –

(क) किशनगंज, अररिया, जोगबनी (ख) पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर

(ग) गया, नवादा, बिहार (घ) गोपालगंज, बेतिया, मोतिहारी

2. खाली जगहों को भरिये।

(i) बिहार के .... भाग पर वन का विस्तार है।

(ii) बिहार में कुल .... जिले हैं।

(iii) कावर झील .... जिला में है।

(iv) भीम बाँध अभ्यारण्य .... की पहाड़ियों में है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

(i) बिहार की चौहद्दी लिखें।

(ii) ताल क्षेत्र की विशेषताओं का वर्णन करें।

(iii) सरैसा क्षेत्र में कौन–कौन से जिले आते हैं और उनका क्या महत्व है?

(iv) बिहार की ज्यादातर चीनी मिलें उत्तर बिहार में हैं। क्यों?

(v) बाढ़ का पानी उतरते ही गाँवों एवं घरों की प्राथमिक जरुरतें क्या होती हैं?

(vi) बरसात में उत्तर बिहार के लोगों को किस प्रकार की कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं?

(vii) बाढ़ से बचाव का क्या समाधान है?